Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
4
2016
VOL. 127

FOUNDER'S ESSAY

वे लोग भी तुम्हारे लिए मूल्यवान हैं जिनसे तुम्हारी अनबन रहती है

यदि तुझे लोगों पर विश्वास नहीं है तो तुम समाज में किसी कार्य के निष्पादन में समर्थ नहीं होगे । ऐसा है कि यदि तुम दूसरों पर विश्वास नहीं करते हो तो तुम अन्य को स्वयं के ऊपर विश्वास दिलाने में समर्थ नहीं होगे । दूसरे लोग तुम्हारे बहुमूल्य सम्पत्ति है ।

अप्रील माह नवप्रयास के प्रारंभ का समय होता है । नवयुवकों का समाज में बढ़ोत्तरी हो रही है । अपने कार्यस्थल में नये नये स्थानों को ले रहे हैं । सभी परिस्थितियों में विभिन्न प्रवृति के लोगों से उनका सामना होता है, उनका मुकाबला करना पड़ता है । यह महत्त्वपूर्ण है कि पूर्वाग्रह से किनको पसन्द करें या किनको नापसन्द करें का निर्धारण करने से विरत रहें । विशेषकर हाल के वर्षों में नवयुवकों को ऐशोआराम की जिन्दगी जीने की उत्कठ इच्छा रहती है । और ऐसे सुखद जीवन में बने रहने की कोशिश करते हैं । परन्तु अगर तुम वैसे लोगों से घिरे हो जिनके साथ तुझे चलना है तो तुम उस सुख सुविधा की परीधि से बाहर निकल पाने में समर्थ नहीं होगे ।

कभी कभी व्यक्ति के जीवन में दुर्गम बाधाएँ आती है । वह अपनी सारी शक्तियाँ जुटाता है और स्वयं में सद्विचार एवं ओजस्विता के आने का अनुभव करता है ।

उन लोगों में भी जो क्रोध में आकर अश्लील शब्दों से चोट पहुँचाते हैं बुद्ध अन्तर्निहित हैं । यह महत्त्वपूर्ण है कि जब तुम्हारा उनसे सामना होता है तुम उनसे हँसकर मिलो प्रमुदित होकर उनका स्वागत करो । ऐसा करने मात्र से ही तुम्हारे इर्द-गिर्द का वातावरण पूर्ण रूप से सुधर जाएगा ।

सौजन्य-कोइसोज़ुकान 8 (कोसेई पब्लिसिंग को०) पृ० 136-137

Living the Lotus
Vol. 127 (April 2016)

Published by Rissho Kosei-kai International,
Fumonkan, 2-6-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo, 166-8537 Japan
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp
Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है । इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था । यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं ।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं ।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है । इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है ।

GUIDANCE
BY PRESIDENT NIWANO

मैं और तुम-हम सभी बुद्ध हैं

निचिनो निवानो
रिश्शो कोसेइ काई अध्यक्ष

जीवित प्राणी एवं बुद्ध एक ही हैं

जब हर वर्ष 8 अप्रील को वसन्त ऋतु के चमकते सूर्य की मन्द धूप में

शाक्यमुनि बुद्ध का जन्मोत्सव मनाते हैं, हम पुष्पवेदिका में स्थापित शिशु बुद्ध की प्रतिमा पर मीठी चाय चढ़ाकर श्रद्धांजली देते हैं। उक्त अवसर पर बहुत सारे लोग अध्यवसायी होकर बुद्ध की भाँति आचरण करने के अपने व्रत का नवीकरण करते हैं। उस समय फिर भी मन के किसी भाग में ऐसी भावना उठ सकती है कि मेरे एवं बुद्ध के मध्य की दूरी इतनी अधिक है कि मेरा बुद्ध बनना कल्पना मात्र लगता है। यह भी सोच सकते हो कि यद्यपि मैं भला कार्य करता हूँ परन्तु मैं जीवन में बुद्ध के समान सदा विवेकशील अनुकम्पामय बना नहीं रह सकूँगा। गाथा में है - जीवित प्राणी मूलतः बुद्ध है, यह जल और वर्फ जैसा है।

जल बिना वर्फ नहीं होता, प्राणी नहीं तो बुद्ध भी नहीं हैं।

यह गाथा जेन आचार्य हाकुयिन (1685-1768) द्वारा रचित 'ज़ाजेन वासान' (ध्यान में बैठे की प्रशंसा में) में आया है। यहाँ हाकुयिन का अर्थ है कि जीवित प्राणी एवं बुद्ध एक दूसरे में एकीभूत हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि जीवित प्राणी एवं बुद्ध मूलतः एक ही हैं इसलिए जीवित प्राणियों से बुद्ध पृथक नहीं हैं। इसके अतिरिक्त रिनजाइ जेन सम्प्रदाय के आचार्य पूज्य मुमोन यामदा (1900-1988) के गाथा में कहा गया है- "जीवित प्राणी मूलतः बुद्ध हैं" ही बुद्धधर्म का आधारभूत सिद्धान्त है और "यदि आप सचमुच में इस गाथा को समझते हैं तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आप पूर्ण रूप से बुद्धधर्म के मूल आशय को ग्रहण किया है।" हो सकता है कि एक अर्थ में, दूसरों के मध्य इस सार को प्रसारित करने हेतु अनेक लोगों ने लम्बे काल के अन्तराल में एक के बाद एक उपायों के द्वारा उपदेश एवं दिशानिर्देश करने के कौशल्य में उत्तरोत्तर बृद्धि की है। हमें साधारणतः विश्वास है कि "मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ, बुद्ध से पूर्णतः भिन्न हूँ।"दूसरे शब्दों में कहें तो एक साधारण व्यक्ति और बुद्ध पूर्णतः पृथक हैं। हम इसे सर्वविदितमानते हैं कि हम बुद्ध नहीं हो सकते हैं। लेकिन ऐसी बातें नहीं हैं। जब हम मुस्कुराते हैं, दूसरों के साथ शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करते हैं हमारा हृदय सुकोमल हो जाता है।जब हम दूसरों के दुःख दर्द की बातें सुनते हैं हमारे हृदय में पीड़ा होती है। जब हम दूसरों को आनन्दोल्लास में देखते हैं तो हमें भी खुशी मिलती है। ये विविध प्रतिक्रियायें इसलिए होति है कि हम मानव हैं और बुद्ध भी समान हैं। हमारे समान साधारण लोगों और सन्तों का अस्तित्व अलग अलग नहीं है। हमारे दैनिक जीवन के क्रियाकलाप का लक्ष्य अपने स्वग्रहित मार्ग पर सदा चलते रहना है।

स्व के सत्य को जानो

बुद्ध भी एक पुरुष हैं जिन्हें साक्षात्कार हुआ कि वे बुद्ध हैं।

इसका अर्थ है कि उन्हें जीवन की पवित्रता का बोध हुआ और उन्होंने स्व के सत्य को जाना। फिर भी, जैसाकि शाक्यनुनि बुद्ध ने कहा है "सभी जीवित प्राणियों में ज्ञान है तथा तथागत के गुणों के बीज अन्तर्निहित हैं। वे उनके प्रति सजग नहीं हैं क्योंकि वे भ्रमित हैं आसक्तियोंसे निबद्ध है।" हम अपने इन बेड़ियों से मुक्ति पाने में असमर्थ हैं। इस संबन्ध एक जेन पुजारी ने स्वयं को इस सत्य के प्रति जागरुक रखने के लिए एक उपाय का सहारा लिया। स्वयं से कहते कि "ओ मास्टर!" और उत्तर में कहते "हाँ महाशय।" पुनः स्वयं से पुछते और स्वयं उत्तर देते- "क्या तुम्हारी आँखें खुली हैं?" और उत्तर में "हाँ खुली हैं।" "अपने स्व के सत्य के प्रति विस्मृत नहीं होना?", "हाँ वैसा नहीं करुँगा।" और इस संबन्ध ऐसी गाथायें हैं-

ऐसा नहीं सोचना कि बादल के छट जाने से प्रकाश हुआ।
चन्द्रमा सदा आकाश में निरन्तर चमकता रहता है ।।

जब भ्रम एवं आसक्ति का बादल छँट जाता है हमें अपने अन्तर्निहित प्रकाश का बोध हो जाता है।

अपने संबन्ध बोलें तो "मैं स्वयं से पूछता हूँ, "ओ निचिको" और अपने स्वयं के बोध को बढ़ाने के लिए प्रत्युत्तर भी देता हूँ। इस प्रकार के उपाय का सहारा लेना आमोद-प्रमोद भरा है।जैसा कि उक्तियों में है- "कर्मों के प्रभाव से बुद्धबीज अंकुरित होता है।" तुझे भी आनन्द मिलेगा जब तुम संघ के सदस्यों से प्रोत्साहन के शब्दों को सुनोगे। जैसा कि धर्म बैठक में कहा जाता है, उदाहरण स्वरुप, दयाभाव एवं हर्षोल्लास का भाव जो हृदय में पहले नहीं था, उनके साथ जीओ। ऐसा होगा, क्योंकि तुम्हारा बुद्ध स्वभाव उनके प्रति आकर्षित है। कहने के अनुरूप ऐसा होता है क्योंकि बुद्ध बुद्धों को उपदेश करते हैं और दोनों साथ मिलकर मार्ग का अन्वेषण करते हैं। जेन आचार्य रियोकान (1781-1831) के शब्दों में समस्त प्राणियों में वही एकीभूत का भाव है जो साधारण लोग एवं सन्तों के मध्य हैं। बे सब बुद्धस्वभाव के हैं। यदि तुम सभी जीवित प्राणियों को नमन करते हो जैसा कि बुद्ध के तात्विक शरीर को, तब तुम वैसे पुरुष हो जो बुद्धत्व प्राप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है।

स्व के सत्य को जानो। जीवित प्राणी एवं बुद्ध के एकीकृत भाव को पहचानो, उसका बोध करो। जैसा कि बुद्धमार्ग को परम श्रेष्ट मार्ग कहा गया है फिर भी मानव के स्वभाव में है कि जब हमारे मार्ग को समझने का प्रारंभ हो जाता हम बिना रुके ही कर्मट्ठ होकर मार्ग पर चलते जाते है। ऐसे मनवाले पुरुष के बुद्धस्वभाव का कार्यरूप है।

From *Kosei*, April 2016.

Child Care lifeline

प्रत्येक दिन मैं अपनी पुत्री के ऊपर, जो प्राथमिक विद्यालय के द्वितीय श्रेणी की छात्रा है, क्रुद्ध हो जाती हूँ कि वह विद्यालय के लिए सदा विलम्ब से तैयार होती है।

Q प्रश्नः मेरी पुत्री जो प्राथमिक विद्यालय के द्वितीय श्रेणी की छात्रा है उसके लिए प्रातः विद्यालय के लिए तैयार होना कठिन होता है। इसलिए मै पहले से उठने के लिए यह कहते हुए प्रेरित करती हूँ- जल्दी करो, यह करो वह करो या तुमने यह नहीं किया, वह नहीं किया। तब वह मुझे पलट कर ज़बाब देती है-माँ! चुप रहो। जब मैं उसकी बातें सुनती हूँ मुझे क्रोध आ जाता है, आपे से बाहर होकर उस पर चिल्लाती हूँ- ठीक, अब से मैं कुछ नहीं कहूँगी। प्रत्येक दिन यही बातें होती हैं।

A उत्तरः यदि वह कुछ करने जा रही है उसके पूर्व ही उसके करने के निश्चय में बाधा उत्पन्न करती हो तो उसकी स्वतः कुछ करने की प्रेरणा जाती रहेगी। वह स्वतः कुछ करने में समर्थ नहीं रहेगी जब तक उसे करने को प्रेरित नहीं किया एगा। अन्ततोगत्वा वह शायद ऐसी हो जाय जो कहने पर भी कुछ करने में मर्थ नहीं रहे। सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य किसी माता पिता का होता है कि वे संतान की स्वच्छन्द सोच को प्रोत्साहित करें। संतान की स्वच्छन्दता को प्रोत्साहित करने के पीछे उन्हें जिम्मेदारी सौंपने की आवश्यकता है। बच्चों पर निगरानी रखते हुए यह आवश्यक नहीं है कि मातापिता बच्चों के हर कार्य में हाथ बटाएँ या हर कार्य में हस्तक्षेप करें। इन रिस्थितियों से निपटने के लिए मातापिता को धैर्य रखने एवं प्रयत्न करने की आवश्यकता है। बच्चों को पालने पोसने में माता पिता के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे उनके साथ सदा इस प्रकार का सम्पर्क बनाये रखें, इससे उन्हें अपने संबन्ध सोचने में मदद मिले। माता पिता के लिए ऐसा करना अधिक महत्त्व का है कि बजाय उन्हें क्या करना चाहिए की मात्र शिक्षा देना। इस प्रकार का संबन्ध रखने से अच्छा होगा कि बच्चों से प्रश्न करें, जैसे कि कब तुम अपने कपड़े बदलते हो ? तुम कितनी देर तक खेल रहे थे ? या ये चीजें कैसी हैं ? मनुष्यों के बच्चे जीवन में कुछ करने का अवसर पाने के लिए जन्म लेते है। बच्चों को शायद जीवन में कटु निराशा का अनुभव हुआ हो या कभी कभी असफलता की परेशानियों का अहसास हुआ हो। यह महत्त्व का है कि मातापिता इन हालातों के बीच अपने को सामान्य बनाए रखें और बच्चों को विश्वास के साथ देखे कि उनका अनुभव बहुमूल्य है। यह, उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व के पोषण के लिए अनिवार्य है।

(टोकियो परिवार शिक्षा शोध संस्थान के सौजन्य से)

(नोट : उत्तर टोकियो पारिवारिक शिक्षा संस्थान)

In cooperation with Tokyo research Institute for Family Education

On the basis of the principle, “If parents change, so will their children,” the Tokyo Research Institute for Family Education hold lecture meetings in various parts of Japan and abroad, where the consultation is provided on child raising. Many happy families have been born through “the family education of learning from the child.”

Director's Column

मैं स्वयं बुद्ध हूँ

जब कभी मैं धर्म केन्द्र या घर में बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़ता हूँ मैं परम शान्ति एवं कृतज्ञभाव से प्लावित हो जाता हूँ। संस्थापक निवानो की शिक्षा है कि तुम सत्यतः बुद्ध हो। बुद्धों के इस परिदृश्य से (जिसे मैंने रिश्शो कोसेइ काइ से जुड़ जाने से पूर्व में नहीं देखा था) आश्चर्यचकित होने की जगह मैंने अनुभव किया है कि मेरे मन का विस्तार हो रहा है, मन गर्मजोशी से भर रहा है। मैं स्वयं ही बुद्ध हूँ, विश्व का महाजीवन हूँ। एक ही समस्त जीवों के साथ है। उस एक का सारतत्त्व प्रज्ञा एवं करुणा है।

जब कभी जीवन में प्रकारान्तर से सुख एवं दुःख आते हैं हम अपनी तुलना दूसरों से या विविध घटनाओं के घटित होने से करते हैं। हम बुद्ध से एकाकार हो जाते है। जब हम इस सत्य पर अपने विचार को केन्द्रित करते हैं हमारे मन का विस्तार विश्व को आच्छादित करता है। हमारे मुख पर एक मुस्कान आ जाती है और हमारा चित्त दयाभाव एवं आनन्द से भर जाता है।

रिश्शो कोसेइ काइ का विश्व संघ अगले माह परम पवित्र हाल में संस्थापक निवानो के जन्मोत्सव का 110 वाँ वर्षगाँठ मनाने के लिए एकत्र होगा। इस समागम को स्वयं के एवं विश्व में सुदूर के समस्त लोगों के अमूल्य जीवन की चेतना के विस्तार को सुअवसर बनाएँगे।

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय बिभाग निर्देशक

शोको मिजुतानी

Rissho Kosei-kai

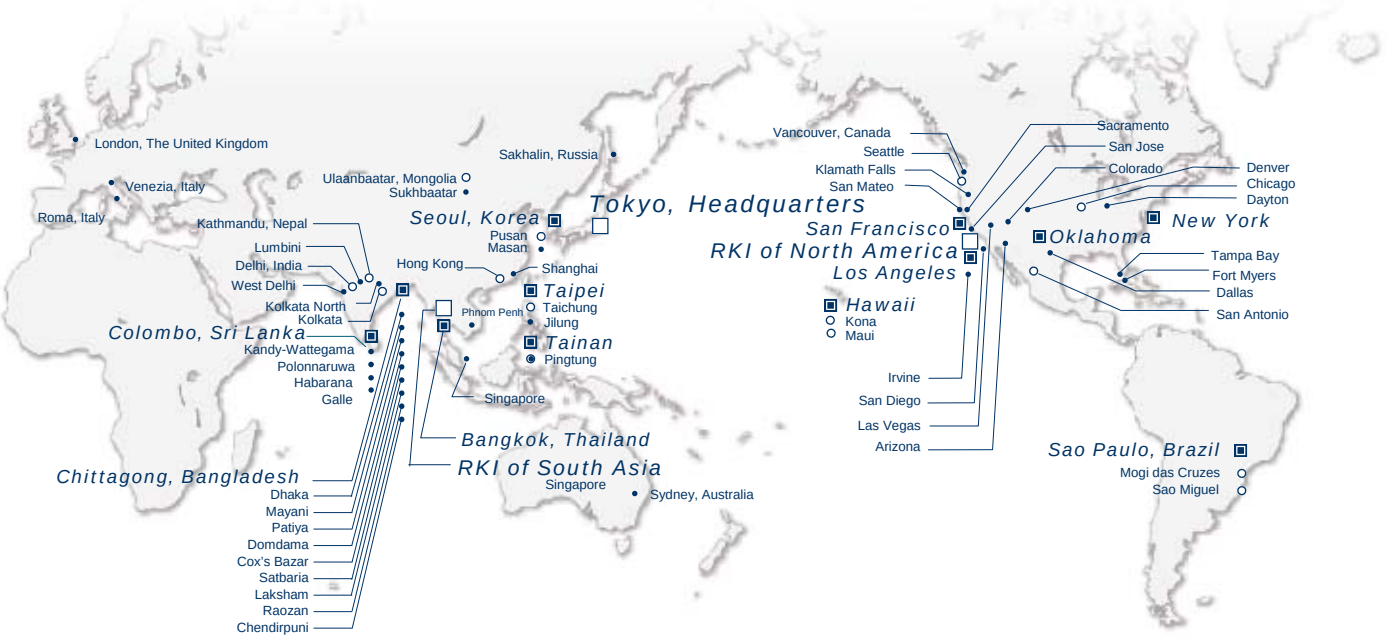

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers 2016

Rissho Kosei-kai International

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Rd.Clearwater, FL 33764, USA
Tel: (727) 560-2927
e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattle@juno.com
http:// www.buddhistLearningCenter.com

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654
e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls
1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1571 Race Street, Denver, Colorado 80206, U.S.A.
Tel: 1-303-810-3638

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
635 Kling Dr, Dayton, OH 45419, U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung
No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,
Taichung City 401, Taiwan
Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 *Fax:* 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong,
Special Administrative Region of the People's Republic of China
Tel & Fax: 852-2-369-1836

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15f Express tower, Enkh taiwnii urgun chuluu, 1st khoroo, Chingeltei district, Ulaanbaatar, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia
Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris
86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

Rissho Kosei-kai of Sydney

International Buddhist Congregation (IBC)
5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami, Tokyo, 166-8537, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House No.467, Road No-8 (East), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Maitree Sangha, Mayani Bazar, Mayani Barua Para, Mirsarai,
Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei-kai Dhamma Foundation, Sri Lanka
382/17, N.A.S. Silva Mawatha, Pepiliyana, Boralesgamuwa, Sri Lanka
Tel & Fax: 94-11-2826367

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal
Tel: 977-1-552-9464 *Fax:* 977-1-553-9832
e-mail: nrkk@wlink.com.np

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai